

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय समाज में स्त्रीकरण: लैंगिक आयामों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

चक्रपाणि

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग गंजडुंडवारा पीजी कॉलेज, गंजडुंडवारा, कासगंज, उत्तर प्रदेश

Email: chakrapanik1986@gmail.com

Received: 25/07/2026 | Accepted: 27/08/2026 | Published: 30/09/2026

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समानता, समावेशन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने वाली एक महत्वपूर्ण नीति के रूप में देखा जा रहा है। भारतीय समाज में शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक अवसरों के वितरण, सामाजिक गतिशीलता और विभिन्न समूहों की सामाजिक स्थिति को प्रभावित करने वाली संस्था भी है। इस संदर्भ में लैंगिक असमानता को सामाजिक स्त्रीकरण के एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में समझना आवश्यक है। यद्यपि भारत में महिलाओं और बालिकाओं की शैक्षिक भागीदारी में पिछले दशकों में वृद्धि हुई है, फिर भी सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं, आर्थिक स्थिति, डिजिटल विभाजन, घरेलू जिम्मेदारियों तथा क्षेत्रीय असमानताओं के कारण शिक्षा के अवसरों में लैंगिक अंतर पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निहित लैंगिक समानता एवं समावेशन संबंधी प्रावधानों का भारतीय समाज में विद्यमान लैंगिक स्त्रीकरण के संदर्भ में समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन है। इसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सरकारी दस्तावेजों, उपलब्ध शैक्षिक रिपोर्टों तथा संबंधित अकादमिक साहित्य का उपयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नीति में बालिकाओं एवं महिलाओं की शिक्षा तक पहुँच, भागीदारी और निरंतरता को बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं।

प्रमुख शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सामाजिक स्त्रीकरण, लैंगिक असमानता, महिला शिक्षा, सामाजिक समावेशन, सामाजिक गतिशीलता।

1. प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय समाज अपनी विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और क्षेत्रीय संरचनाओं के कारण जटिल सामाजिक व्यवस्था का उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस व्यवस्था में व्यक्तियों और समूहों की सामाजिक स्थिति समान नहीं होती, बल्कि जाति, वर्ग, लिंग, धर्म, क्षेत्र तथा आर्थिक संसाधनों जैसे अनेक आधारों पर अवसरों और संसाधनों का वितरण अलग-अलग दिखाई देता है। समाजशास्त्र में इसी असमान वितरण को समझने के लिए सामाजिक स्त्रीकरण (Social Stratification) की अवधारणा का प्रयोग किया जाता है। सामाजिक स्त्रीकरण केवल आर्थिक अंतर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, रोजगार, सामाजिक प्रतिष्ठा, निर्णय लेने की क्षमता और जीवन के विभिन्न अवसरों तक पहुँच को भी प्रभावित करता है। इस दृष्टि से लैंगिक आधार पर होने वाली असमानता सामाजिक स्त्रीकरण का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में समय के साथ महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। शिक्षा के विस्तार, संवैधानिक अधिकारों, महिला-केंद्रित नीतियों और सामाजिक जागरूकता ने महिलाओं के लिए पहले की अपेक्षा अधिक अवसर उपलब्ध कराए हैं। इसके बावजूद शिक्षा और सामाजिक अवसरों के क्षेत्र में लैंगिक अंतर पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। विशेष रूप से सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों में बालिकाओं की शिक्षा अनेक बार घरेलू जिम्मेदारियों, आर्थिक कठिनाइयों, कम उम्र में विवाह, सुरक्षा संबंधी

चिंताओं तथा पारंपरिक लैंगिक धारणाओं से प्रभावित होती है। इसलिए केवल विद्यालय में नामांकन बढ़ जाना लैंगिक समानता का पर्याप्त संकेत नहीं माना जा सकता; शिक्षा तक पहुँच के साथ-साथ उसकी निरंतरता, गुणवत्ता और शिक्षा के बाद उपलब्ध सामाजिक एवं आर्थिक अवसरों को भी देखना आवश्यक है।

शिक्षा इस संदर्भ में विशेष महत्व रखती है, क्योंकि यह व्यक्ति की सामाजिक स्थिति और अवसरों को प्रभावित करने वाली प्रमुख सामाजिक संस्था है। शिक्षा व्यक्ति में ज्ञान और कौशल विकसित करने के साथ-साथ सामाजिक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता को भी प्रभावित करती है। विशेष रूप से महिलाओं के लिए शिक्षा सामाजिक गतिशीलता और आर्थिक आत्मनिर्भरता के रास्ते खोल सकती है। UNESCO (2020) भी शिक्षा में समानता और समावेशन को व्यापक सामाजिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण मानता है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था में लैंगिक असमानता को कम करना केवल शैक्षिक नीति का प्रश्न नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय का भी प्रश्न है।

इसी व्यापक संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) महत्वपूर्ण हो जाती है। नीति ने शिक्षा को अधिक समावेशी और समानतापूर्ण बनाने पर विशेष जोर दिया है। इसमें सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समूहों के लिए शिक्षा के अवसरों को बढ़ाने के साथ-साथ लैंगिक असमानताओं को कम करने की आवश्यकता को भी स्वीकार किया गया है। नीति में बालिकाओं और महिलाओं की शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने के लिए Gender Inclusion Fund जैसे प्रावधानों का उल्लेख किया गया है तथा सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समूहों की शिक्षा को नीति के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में शामिल किया गया है (Ministry of Human Resource Development [MHRD], 2020)।

प्रस्तुत शोध-पत्र इसी दृष्टिकोण को आधार बनाते हुए यह समझने का प्रयास करता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय समाज में विद्यमान लैंगिक स्तरीकरण को कम करने में किस प्रकार योगदान दे सकती है तथा इसके क्रियान्वयन के सामने कौन-सी सामाजिक चुनौतियाँ मौजूद हैं। अध्ययन का केंद्रीय प्रश्न यह है कि क्या शिक्षा के अवसरों में समानता बढ़ाने वाले नीतिगत प्रयास वास्तव में महिलाओं और बालिकाओं की सामाजिक स्थिति में व्यापक परिवर्तन ला सकते हैं। इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए नीति के प्रावधानों को भारतीय समाज की लैंगिक संरचना, सामाजिक असमानताओं और सामाजिक गतिशीलता के संदर्भ में देखा गया है।

2. शोध के उद्देश्य एवं शोध-पद्धति

2.1 शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भारतीय समाज में विद्यमान लैंगिक स्तरीकरण के संदर्भ में समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

1. भारतीय समाज में लैंगिक स्तरीकरण और शैक्षिक असमानता के पारस्परिक संबंध को समझना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में लैंगिक समानता एवं समावेश से संबंधित प्रमुख प्रावधानों का अध्ययन करना।
3. यह विश्लेषण करना कि NEP 2020 महिलाओं और बालिकाओं की शिक्षा तक पहुँच, भागीदारी तथा निरंतरता को किस प्रकार प्रभावित कर सकती है।
4. शिक्षा के माध्यम से लैंगिक असमानता को कम करने और सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देने की संभावनाओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना।
5. नीति के प्रभावी क्रियान्वयन में उपस्थित प्रमुख सामाजिक एवं संरचनात्मक चुनौतियों की पहचान करना।

2.2 शोध-पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। शोध में प्राथमिक आँकड़ों के स्थान पर द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय एवं भारत सरकार द्वारा प्रकाशित संबंधित दस्तावेजों और रिपोर्टों, UNESCO तथा अन्य विश्वसनीय संस्थाओं की रिपोर्टों, प्रकाशित शोध-पत्रों और विषय से संबंधित पुस्तकों का संदर्भ लिया गया है।

अध्ययन में उपलब्ध साहित्य को केवल संकलित करने के बजाय उसे समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है। विशेष रूप से सामाजिक स्तरीकरण, लैंगिक असमानता, सामाजिक बहिष्करण और सामाजिक गतिशीलता जैसी अवधारणाओं को

विश्लेषण का आधार बनाया गया है। साथ ही, यह देखने का प्रयास किया गया है कि NEP 2020 के नीतिगत प्रावधान भारतीय समाज में पहले से मौजूद सामाजिक एवं लैंगिक असमानताओं को कम करने में किस सीमा तक सहायक हो सकते हैं।

इस अध्ययन की एक महत्वपूर्ण सीमा यह है कि यह मुख्यतः उपलब्ध द्वितीयक सामग्री पर आधारित है। इसलिए इससे प्राप्त निष्कर्षों को प्रत्यक्ष क्षेत्रीय सर्वेक्षण के निष्कर्षों के रूप में नहीं, बल्कि उपलब्ध नीतिगत एवं अकादमिक साहित्य के समाजशास्त्रीय विश्लेषण के रूप में देखा जाना चाहिए।

3. भारतीय समाज में लैंगिक स्तरीकरण और शिक्षा

भारतीय समाज में लैंगिक स्तरीकरण को केवल पुरुषों और महिलाओं के बीच जैविक अंतर के आधार पर नहीं समझा जा सकता। यह सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मान्यताओं, पारिवारिक भूमिकाओं और संसाधनों के असमान वितरण से निर्मित होता है। समाज में पुरुषों और महिलाओं के लिए निर्धारित भूमिकाएँ उनके शिक्षा, रोजगार, संपत्ति, निर्णय-निर्माण तथा सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के अवसरों को प्रभावित करती हैं। इस दृष्टि से लैंगिक असमानता एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से निरंतर पुनरुत्पादित होती रहती है।

शिक्षा इस प्रक्रिया में दोहरी भूमिका निभाती है। एक ओर, शिक्षा सामाजिक असमानताओं को बनाए रखने वाली धारणाओं को आगे बढ़ा सकती है, वहीं दूसरी ओर यह उन धारणाओं को चुनौती देने और सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी बन सकती है। जब बालिकाओं को समान शैक्षिक अवसर प्राप्त होते हैं, तो उनके ज्ञान, आत्मविश्वास और भविष्य के विकल्पों का विस्तार होता है। इसी कारण महिला शिक्षा को केवल व्यक्तिगत विकास का विषय न मानकर व्यापक सामाजिक परिवर्तन से जोड़कर देखा जाता है।

भारत में बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में पिछले कुछ दशकों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। विद्यालयी शिक्षा में लड़कियों की भागीदारी बढ़ी है और अनेक स्तरों पर लैंगिक अंतर में कमी आई है। फिर भी समानता की स्थिति सभी सामाजिक समूहों और क्षेत्रों में एक जैसी नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों, गरीब परिवारों और सामाजिक रूप से वंचित समुदायों में बालिकाओं की शिक्षा पर आर्थिक स्थिति, घरेलू कार्यों का बोझ, विद्यालय की दूरी, सुरक्षा तथा सामाजिक मान्यताओं का प्रभाव अधिक दिखाई दे सकता है। इस प्रकार लिंग को जाति, वर्ग, क्षेत्र और आर्थिक स्थिति से अलग करके देखने पर असमानता की वास्तविक प्रकृति पूरी तरह सामने नहीं आती।

शिक्षा में लैंगिक असमानता का एक महत्वपूर्ण पक्ष शिक्षा की निरंतरता है। किसी बालिका का विद्यालय में प्रवेश हो जाना अपने आप में पर्याप्त नहीं है। माध्यमिक और उच्च शिक्षा तक उसकी निरंतर भागीदारी, विषय चयन, उच्च शिक्षा में प्रवेश तथा शिक्षा के बाद रोजगार के अवसर भी समानता के महत्वपूर्ण संकेतक हैं। कई बार सामाजिक और पारिवारिक परिस्थितियाँ बालिकाओं को उच्च शिक्षा या रोजगार की दिशा में आगे बढ़ने से रोकती हैं। इसलिए लैंगिक समानता के मूल्यांकन में केवल नामांकन के आँकड़ों के बजाय शिक्षा की पूरी प्रक्रिया को देखना आवश्यक है।

भारतीय समाज में लैंगिक स्तरीकरण का प्रभाव केवल विद्यालय तक सीमित नहीं रहता। शिक्षा व्यक्ति की आगे की सामाजिक स्थिति, रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता को प्रभावित करती है। उच्च शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों तक महिलाओं की बेहतर पहुँच उनके रोजगार विकल्पों का विस्तार कर सकती है। इसके परिणामस्वरूप परिवार के भीतर निर्णय लेने की क्षमता और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी में भी परिवर्तन की संभावना रहती है। इस प्रकार शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में देखा जा सकता है।

हालाँकि, यह मान लेना उचित नहीं होगा कि शिक्षा का विस्तार अपने आप लैंगिक स्तरीकरण को समाप्त कर देगा। शिक्षा से प्राप्त अवसरों का वास्तविक लाभ सामाजिक संरचना, श्रम बाजार, पारिवारिक दृष्टिकोण और संस्थागत परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है। इसलिए लैंगिक समानता के लिए आवश्यक है कि शिक्षा नीति केवल बालिकाओं की संख्या बढ़ाने तक सीमित न रहे, बल्कि उनकी समान पहुँच, निरंतरता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास और आगे के सामाजिक-आर्थिक अवसरों को भी सुनिश्चित करे।

यही वह बिंदु है जहाँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रासंगिकता सामने आती है। नीति ने शिक्षा को अधिक समतामूलक और समावेशी बनाने की आवश्यकता को स्वीकार किया है तथा सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समूहों की शैक्षिक भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया है (MHRD, 2020)। अतः NEP 2020 को लैंगिक स्तरीकरण के संदर्भ में समझते समय यह देखना आवश्यक है कि उसके प्रावधान महिलाओं और बालिकाओं के लिए केवल शिक्षा तक पहुँच ही नहीं, बल्कि समान शैक्षिक अवसर और सामाजिक गतिशीलता के रास्ते किस प्रकार खोलते हैं।

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में लैंगिक समानता एवं समावेशन के प्रावधान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण आधार शिक्षा में समानता और समावेशन है। नीति यह स्वीकार करती है कि शिक्षा के अवसर सभी व्यक्तियों के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं होते और सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियाँ व्यक्ति की शैक्षिक भागीदारी को प्रभावित करती हैं। इसी कारण नीति में Socio-Economically Disadvantaged Groups (SEDGs) पर विशेष ध्यान दिया गया है। इनमें महिलाओं और बालिकाओं के साथ-साथ सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित अनेक समूहों को शामिल किया गया है। इस दृष्टिकोण से लैंगिक समानता को शिक्षा व्यवस्था के व्यापक समावेशी लक्ष्य के साथ जोड़ा गया है (Ministry of Human Resource Development [MHRD], 2020)।

4.1 बालिकाओं की शिक्षा के लिए विशेष प्रावधान

NEP 2020 में लैंगिक असमानता को कम करने के लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है। नीति के अनुसार लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने के लिए लक्षित हस्तक्षेप आवश्यक हैं। इसी उद्देश्य से Gender Inclusion Fund (GIF) की व्यवस्था प्रस्तावित की गई है। इसका उद्देश्य राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को ऐसी पहलों के लिए सहायता प्रदान करना है, जिनसे बालिकाओं और महिलाओं की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच तथा उनकी भागीदारी में सुधार हो सके (MHRD, 2020)।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह प्रावधान इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह लैंगिक असमानता को केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं मानता, बल्कि उसे सामाजिक और संस्थागत परिस्थितियों से जोड़ता है। यदि किसी समूह की शिक्षा में भागीदारी सामाजिक बाधाओं के कारण कम है, तो समान अवसर उपलब्ध कराने के लिए विशेष नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।

4.2 सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समूहों पर ध्यान

नीति में SEDGs के लिए शिक्षा की पहुँच और भागीदारी बढ़ाने पर विशेष जोर दिया गया है। इसमें सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक परिस्थितियों के कारण शिक्षा से अपेक्षाकृत दूर रहने वाले समूहों को ध्यान में रखा गया है। नीति में महिलाओं और बालिकाओं को भी इस व्यापक समूह के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में देखा गया है (MHRD, 2020)।

यह दृष्टिकोण लैंगिक स्त्रीकरण के अध्ययन को अधिक व्यापक बनाता है। उदाहरण के लिए, आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की ग्रामीण बालिका और अपेक्षाकृत संपन्न शहरी परिवार की बालिका के शैक्षिक अवसर समान नहीं होते। इसी प्रकार जाति, आर्थिक स्थिति और क्षेत्रीय परिस्थितियाँ भी लैंगिक अनुभवों को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए लैंगिक समानता के लिए ऐसी नीति आवश्यक है जो महिलाओं के भीतर मौजूद सामाजिक और आर्थिक विविधताओं को भी ध्यान में रखे।

4.3 शिक्षा तक पहुँच और निरंतरता

NEP 2020 का जोर केवल विद्यालय में प्रवेश बढ़ाने पर नहीं है, बल्कि बच्चों को शिक्षा व्यवस्था में बनाए रखने और उनके सीखने के अवसरों को बेहतर बनाने पर भी है। नीति में प्रारंभिक बाल्यावस्था से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षा की निरंतरता और सार्वभौमिक पहुँच का लक्ष्य रखा गया है (MHRD, 2020)।

लैंगिक दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है क्योंकि बालिकाओं की शिक्षा में समस्या कई बार प्रवेश से अधिक निरंतरता की होती है। घरेलू कार्य, परिवार की आर्थिक परिस्थितियाँ, सामाजिक रूढ़ियाँ और किशोरावस्था से जुड़ी आवश्यकताएँ उनकी शिक्षा को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए विद्यालयी संरचना को ऐसी परिस्थितियाँ विकसित करनी होंगी जिनमें बालिकाएँ सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण में अपनी शिक्षा जारी रख सकें।

4.4 उच्च शिक्षा और कौशल के अवसर

लैंगिक समानता केवल विद्यालयी शिक्षा तक सीमित नहीं हो सकती। उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास में महिलाओं की भागीदारी भी उनके सामाजिक और आर्थिक अवसरों को प्रभावित करती है। NEP 2020 उच्च शिक्षा के विस्तार, बहुविषयक शिक्षा, कौशल विकास और रोजगारोन्मुख शिक्षा पर जोर देती है। इसका संभावित प्रभाव यह हो सकता है कि महिलाओं के लिए पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकलकर नए शैक्षिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रवेश के अवसर बढ़ें (MHRD, 2020)।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से इसका महत्व इसलिए है कि शिक्षा और कौशल व्यक्ति की सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करते हैं। यदि महिलाओं को उच्च शिक्षा और रोजगार के समान अवसर मिलते हैं, तो उनकी आर्थिक निर्भरता कम होने के साथ-साथ परिवार और समाज में उनकी निर्णय-निर्माण क्षमता भी मजबूत हो सकती है।

4.5 डिजिटल शिक्षा और नई चुनौती

NEP 2020 में प्रौद्योगिकी और डिजिटल माध्यमों के शैक्षिक उपयोग को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। डिजिटल संसाधनों का विस्तार शिक्षा की पहुँच को बढ़ा सकता है, लेकिन इसका लाभ तभी समान रूप से प्राप्त होगा जब महिलाओं और बालिकाओं की डिजिटल संसाधनों तक पर्याप्त पहुँच हो। उपकरणों की उपलब्धता, इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल दक्षता में असमानता एक नई प्रकार की शैक्षिक असमानता पैदा कर सकती है।

इसलिए लैंगिक समानता के संदर्भ में डिजिटल शिक्षा को केवल तकनीकी प्रगति के रूप में नहीं, बल्कि डिजिटल अवसरों के समान वितरण के प्रश्न के रूप में देखना आवश्यक है। यदि परिवार या समाज में डिजिटल संसाधनों के उपयोग में पुरुषों को प्राथमिकता दी जाती है, तो शिक्षा के नए माध्यम भी मौजूदा लैंगिक स्त्रीकरण को कम करने के बजाय उसे बनाए रख सकते हैं।

इस प्रकार NEP 2020 में लैंगिक समानता से संबंधित प्रावधान केवल बालिकाओं के नामांकन तक सीमित नहीं हैं। Gender Inclusion Fund, SEDGs पर विशेष ध्यान, शिक्षा की निरंतरता, उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षा के अवसर तथा तकनीकी संसाधनों तक पहुँच जैसे पहलुओं को एक साथ देखने पर नीति का समावेशी स्वरूप सामने आता है। फिर भी इन प्रावधानों की वास्तविक सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि इन्हें विभिन्न सामाजिक और क्षेत्रीय परिस्थितियों में कितनी प्रभावशीलता से लागू किया जाता है। यही प्रश्न NEP 2020 और भारतीय समाज में लैंगिक स्त्रीकरण के संबंध को समझने के लिए केंद्रीय महत्व रखता है।

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और लैंगिक स्त्रीकरण में परिवर्तन की संभावनाएँ: समाजशास्त्रीय विश्लेषण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लैंगिक समानता संबंधी प्रावधानों का महत्व केवल शिक्षा व्यवस्था में महिलाओं की संख्या बढ़ाने तक सीमित नहीं है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से शिक्षा सामाजिक संबंधों, अवसरों और व्यक्तियों की सामाजिक स्थिति को प्रभावित करने वाली महत्वपूर्ण संस्था है। इसलिए यदि शिक्षा तक पहुँच और उसकी गुणवत्ता में लैंगिक अंतर कम होता है, तो इसका प्रभाव परिवार, रोजगार, सामाजिक गतिशीलता और निर्णय-निर्माण जैसे व्यापक क्षेत्रों पर भी पड़ सकता है। इस दृष्टि से NEP 2020 को भारतीय समाज में लैंगिक स्त्रीकरण को प्रभावित करने वाली एक संभावित परिवर्तनकारी नीति के रूप में देखा जा सकता है।

5.1 शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता

सामाजिक गतिशीलता का अर्थ व्यक्ति या समूह की सामाजिक स्थिति में होने वाले परिवर्तन से है। शिक्षा इसके प्रमुख साधनों में से एक है, क्योंकि यह व्यक्ति को ज्ञान, कौशल और योग्यता प्रदान करके आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध कराती है। महिलाओं के संदर्भ में इसका महत्व और अधिक हो जाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा महिलाओं को उच्च शिक्षा, रोजगार और व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रवेश के लिए आवश्यक आधार प्रदान कर सकती है।

NEP 2020 में शिक्षा को अधिक समावेशी और अवसरपरक बनाने पर जोर दिया गया है। यदि इसके प्रावधान प्रभावी रूप से लागू होते हैं, तो सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि की बालिकाओं को भी आगे बढ़ने के बेहतर अवसर मिल सकते हैं। इससे शिक्षा का उपयोग केवल व्यक्तिगत विकास के लिए नहीं, बल्कि पीढ़ियों के बीच सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के माध्यम के रूप में किया जा सकता है।

5.2 पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन

भारतीय समाज में लंबे समय से महिलाओं की भूमिका को परिवार और घरेलू दायित्वों से जोड़कर देखा जाता रहा है। ऐसी सामाजिक धारणाएँ कई बार लड़कियों की शिक्षा और कैरियर संबंधी निर्णयों को प्रभावित करती हैं। शिक्षा इन धारणाओं को चुनौती देने की क्षमता रखती है क्योंकि यह महिलाओं को अपने अधिकारों, क्षमताओं और विकल्पों के प्रति अधिक जागरूक बनाती है।

NEP 2020 का समावेशी दृष्टिकोण यदि बालिकाओं को शिक्षा में लंबे समय तक बनाए रखने में सफल होता है, तो इससे पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं में धीरे-धीरे परिवर्तन की संभावना बन सकती है। शिक्षित महिलाओं की बढ़ती भागीदारी परिवार में बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक निर्णयों को भी प्रभावित कर सकती है। इस प्रकार शिक्षा का प्रभाव केवल शिक्षित महिला तक सीमित न रहकर परिवार और अगली पीढ़ी तक पहुँच सकता है।

5.3 आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक स्थिति

शिक्षा और कौशल का महिलाओं की आर्थिक स्थिति से सीधा संबंध है। बेहतर शिक्षा महिलाओं के लिए रोजगार और उद्यमिता के विकल्पों को बढ़ा सकती है। आर्थिक रूप से सक्रिय महिला परिवार की आय में योगदान देने के साथ अपने व्यक्तिगत निर्णयों में भी अधिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकती है।

हालाँकि, शिक्षा प्राप्त कर लेना अपने आप आर्थिक स्वतंत्रता की गारंटी नहीं देता। रोजगार के अवसर, कार्यस्थल की परिस्थितियाँ, समान वेतन, सामाजिक सुरक्षा और परिवार की स्वीकृति जैसे कारक भी महत्वपूर्ण हैं। इसलिए NEP 2020 के प्रभाव का मूल्यांकन करते समय शिक्षा से रोजगार तक की पूरी प्रक्रिया को ध्यान में रखना आवश्यक होगा।

5.4 निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भागीदारी

लैंगिक स्तरीकरण का एक महत्वपूर्ण पक्ष निर्णय लेने की शक्ति का असमान वितरण है। शिक्षा महिलाओं में सूचना, आत्मविश्वास और सामाजिक जागरूकता का विस्तार कर सकती है, जिससे परिवार और समुदाय के स्तर पर उनकी भागीदारी बढ़ने की संभावना रहती है। उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं के लिए सार्वजनिक संस्थाओं, प्रशासन, राजनीति और अन्य पेशेवर क्षेत्रों में प्रवेश के अवसर भी बढ़ सकते हैं।

इस संदर्भ में NEP 2020 की भूमिका अप्रत्यक्ष लेकिन महत्वपूर्ण हो सकती है। नीति यदि महिलाओं को समान शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने में सफल होती है, तो वह दीर्घकाल में महिलाओं की सामाजिक और सार्वजनिक भागीदारी के लिए आधार तैयार कर सकती है।

5.5 लैंगिक असमानता का बहुआयामी स्वरूप

लैंगिक स्तरीकरण को केवल पुरुष और महिला के बीच अंतर के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। भारतीय समाज में किसी महिला का शैक्षिक अनुभव उसकी जाति, वर्ग, आर्थिक स्थिति, निवास क्षेत्र और सामाजिक पृष्ठभूमि से भी प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, आर्थिक रूप से कमजोर ग्रामीण परिवार की बालिका के सामने मौजूद बाधाएँ शहरी और आर्थिक रूप से सक्षम परिवार की बालिका से अलग हो सकती हैं।

इसलिए NEP 2020 के संदर्भ में लैंगिक समानता का वास्तविक मूल्यांकन करते समय यह देखना आवश्यक है कि नीति का लाभ समाज के विभिन्न वर्गों की महिलाओं तक किस सीमा तक पहुँचता है। यही दृष्टिकोण अंतर्संबंधिता (Intersectionality) को महत्वपूर्ण बनाता है। लिंग के साथ अन्य सामाजिक असमानताओं को जोड़कर देखने से लैंगिक स्तरीकरण की वास्तविक प्रकृति अधिक स्पष्ट होती है।

5.6 सामाजिक परिवर्तन की संभावनाएँ और सीमाएँ

NEP 2020 शिक्षा के माध्यम से लैंगिक असमानता को कम करने के लिए महत्वपूर्ण आधार उपलब्ध कराती है, लेकिन नीति को सामाजिक परिवर्तन का अकेला साधन मानना उचित नहीं होगा। शिक्षा व्यवस्था के बाहर मौजूद सामाजिक मान्यताएँ, परिवार की संरचना, आर्थिक असमानता और श्रम बाजार की परिस्थितियाँ भी महिलाओं की स्थिति को प्रभावित करती हैं।

इसलिए नीति की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि उसके प्रावधान विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों तक कितनी प्रभावी ढंग से पहुँचते हैं। केवल Gender Inclusion Fund या समान अवसरों का प्रावधान कर देना पर्याप्त नहीं है; आवश्यक है कि इन योजनाओं का लाभ वास्तविक रूप से उन बालिकाओं तक पहुँचे जो सामाजिक और आर्थिक बाधाओं के कारण शिक्षा से पीछे रह जाती हैं।

इस प्रकार समाजशास्त्रीय दृष्टि से NEP 2020 में लैंगिक स्तरीकरण को कम करने की पर्याप्त संभावनाएँ दिखाई देती हैं। शिक्षा की समान पहुँच, उच्च शिक्षा में भागीदारी, कौशल विकास और आर्थिक अवसरों का विस्तार महिलाओं की सामाजिक स्थिति को मजबूत कर सकता है। लेकिन इन संभावनाओं को वास्तविक सामाजिक परिवर्तन में बदलने के लिए नीति, संस्थागत व्यवस्था और सामाजिक दृष्टिकोण—तीनों स्तरों पर एक साथ परिवर्तन आवश्यक होगा।

6. प्रमुख चुनौतियाँ एवं आलोचनात्मक विमर्श

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में लैंगिक समानता और समावेशन को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, लेकिन नीतिगत प्रावधानों और उनके वास्तविक सामाजिक प्रभाव के बीच अंतर को समझना आवश्यक है। भारतीय समाज में लैंगिक असमानता केवल शिक्षा व्यवस्था से

उत्पन्न समस्या नहीं है। इसके पीछे परिवार, संस्कृति, आर्थिक स्थिति, सामाजिक मान्यताएँ और क्षेत्रीय असमानताएँ भी कार्य करती हैं। इसलिए NEP 2020 के प्रावधानों का प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि इन व्यापक सामाजिक परिस्थितियों को किस सीमा तक संबोधित किया जाता है।

सबसे महत्वपूर्ण चुनौती सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूढ़ियाँ हैं। अनेक परिवारों और समुदायों में अभी भी लड़कियों की शिक्षा को लड़कों की शिक्षा की तुलना में अलग प्राथमिकता दी जाती है। घरेलू कार्यों और देखभाल की जिम्मेदारियाँ भी प्रायः महिलाओं और बालिकाओं पर अधिक होती हैं। ऐसी परिस्थितियों में विद्यालय तक पहुँच होने के बावजूद उनकी शिक्षा की निरंतरता प्रभावित हो सकती है। इसलिए लैंगिक समानता के लिए केवल संस्थागत सुविधाओं का विस्तार पर्याप्त नहीं है; सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन भी आवश्यक है।

दूसरी चुनौती आर्थिक असमानता है। गरीब परिवारों में सीमित संसाधनों के कारण शिक्षा से संबंधित प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष खर्च परिवार के लिए कठिन हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बालिकाओं की शिक्षा प्रभावित होने की संभावना रहती है। विशेष रूप से जब परिवार को घरेलू आय में योगदान और शिक्षा के बीच चुनाव करना पड़ता है, तब लैंगिक आधार पर असमान निर्णय लिए जा सकते हैं। इस कारण शिक्षा में समानता को व्यापक सामाजिक-आर्थिक नीतियों से जोड़ना आवश्यक है।

तीसरी प्रमुख चुनौती डिजिटल लैंगिक विभाजन की है। NEP 2020 में तकनीक आधारित शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, लेकिन डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता समाज के सभी वर्गों में समान नहीं है। इंटरनेट, स्मार्टफोन और कंप्यूटर तक पहुँच में परिवार तथा क्षेत्र के आधार पर अंतर हो सकता है। यदि उपलब्ध उपकरणों पर पुरुष सदस्यों को प्राथमिकता मिलती है, तो बालिकाएँ डिजिटल शिक्षा के अवसरों से वंचित हो सकती हैं। इस प्रकार तकनीक, जो समानता का माध्यम बन सकती है, पर्याप्त पहुँच के अभाव में नई असमानता भी पैदा कर सकती है।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच अंतर भी महत्वपूर्ण है। शहरी क्षेत्रों में शिक्षण संस्थानों, परिवहन, डिजिटल संसाधनों और उच्च शिक्षा के अवसर अपेक्षाकृत अधिक उपलब्ध हो सकते हैं, जबकि ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में विद्यालय की दूरी, परिवहन, आधारभूत सुविधाओं और शिक्षकों की उपलब्धता जैसी समस्याएँ अधिक प्रभाव डाल सकती हैं। अतः समान नीति का प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में एक जैसा होना आवश्यक नहीं है।

इसके अतिरिक्त, नीति के क्रियान्वयन की चुनौती भी महत्वपूर्ण है। किसी नीति की सफलता केवल उसके उद्देश्यों और प्रावधानों से निर्धारित नहीं होती, बल्कि वित्तीय संसाधनों, संस्थागत क्षमता, प्रशासनिक निगरानी और स्थानीय स्तर पर कार्यान्वयन की गुणवत्ता भी निर्णायक होती है। NEP 2020 में लैंगिक समावेशन के लिए किए गए प्रावधानों का वास्तविक प्रभाव तभी दिखाई देगा जब उनके लिए निर्धारित संसाधन लक्षित समूहों तक समय पर और प्रभावी रूप से पहुँचें।

आलोचनात्मक दृष्टि से यह भी समझना आवश्यक है कि लैंगिक समानता को केवल महिलाओं की शिक्षा बढ़ाने के प्रश्न तक सीमित नहीं किया जा सकता। शिक्षा में लड़कियों की संख्या बढ़ाना महत्वपूर्ण उपलब्धि है, लेकिन वास्तविक समानता के लिए शिक्षा की गुणवत्ता, विषय चयन, उच्च शिक्षा में प्रतिनिधित्व, कौशल, रोजगार और नेतृत्व के अवसरों को भी देखना होगा। यदि महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी समान रोजगार और निर्णय लेने के अवसरों से वंचित रहती हैं, तो शिक्षा का प्रभाव सामाजिक स्तरीकरण को पूरी तरह बदलने में सीमित रह सकता है।

इस प्रकार NEP 2020 में लैंगिक असमानता को कम करने की स्पष्ट संभावनाएँ हैं, लेकिन उनका परिणाम सामाजिक संरचना और क्रियान्वयन की वास्तविक परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। इसलिए नीति को केवल शैक्षिक सुधार के रूप में नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के हिस्से के रूप में देखना अधिक उपयुक्त होगा।

7. निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में लैंगिक स्तरीकरण एक बहुआयामी सामाजिक समस्या है, जिसका प्रभाव शिक्षा, रोजगार, आर्थिक अवसर, निर्णय-निर्माण और सामाजिक प्रतिष्ठा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई देता है। शिक्षा इस असमानता को कम करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती है, लेकिन इसके लिए केवल विद्यालयों में बालिकाओं का नामांकन बढ़ाना पर्याप्त नहीं है। शिक्षा की निरंतरता, गुणवत्ता, उच्च शिक्षा तक पहुँच और शिक्षा के बाद उपलब्ध सामाजिक एवं आर्थिक अवसर भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस आवश्यकता को व्यापक रूप से स्वीकार किया है। नीति में सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समूहों की शिक्षा पर विशेष ध्यान तथा लैंगिक असमानता को कम करने के लिए Gender Inclusion Fund जैसे प्रावधान किए गए हैं (MHRD, 2020)। इन प्रावधानों से यह संकेत मिलता है कि नीति शिक्षा में समानता को केवल सार्वभौमिक पहुँच के रूप में नहीं, बल्कि उन सामाजिक समूहों के लिए विशेष अवसर उपलब्ध कराने के रूप में भी देखती है जो ऐतिहासिक या सामाजिक कारणों से पीछे रह गए हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से NEP 2020 का महत्व इस बात में है कि शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता के माध्यम के रूप में उपयोग करने की संभावनाएँ इसमें दिखाई देती हैं। यदि बालिकाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उच्च शिक्षा, कौशल विकास और रोजगारोन्मुख अवसरों तक समान पहुँच प्राप्त होती है, तो इससे उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन संभव है। इसका प्रभाव परिवार के भीतर निर्णय-निर्माण और व्यापक सामाजिक भागीदारी पर भी पड़ सकता है।

फिर भी यह निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगी कि केवल NEP 2020 के प्रावधानों से भारतीय समाज में लैंगिक स्त्रीकरण समाप्त हो जाएगा। सामाजिक रूढ़ियाँ, आर्थिक असमानता, डिजिटल विभाजन, ग्रामीण-शहरी अंतर तथा नीति के क्रियान्वयन से जुड़ी समस्याएँ अभी भी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं। इसलिए नीति की वास्तविक सफलता उसके प्रभावी और समान कार्यान्वयन पर निर्भर करेगी।

संदर्भ सूची (References)

- [1]. Aggarwal, J. C. (2018). Development and planning of modern education. Vikas Publishing House.
- [2]. Batra, P. (2005). Voice and agency: The process of teacher change. Educational Research, 47(2), 155–174. <https://doi.org/10.1080/00131880500104365>
- [3]. Government of India. (2019). Draft national education policy 2019. Ministry of Human Resource Development.
- [4]. Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Human Resource Development.
- [5]. Government of India. (2021). Women and men in India 2021: A statistical compilation. Ministry of Statistics and Programme Implementation.
- [6]. Government of India. (2022). Educational statistics at a glance. Ministry of Education.
- [7]. Government of India. (2023). UDISE+ 2022–23: Report on school education in India. Department of School Education & Literacy, Ministry of Education.
- [8]. Government of India. (2024). UDISE+ 2023–24: Report on school education in India. Department of School Education & Literacy, Ministry of Education.
- [9]. Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
- [10]. Ministry of Education. (2021). All India survey on higher education 2019–20. Department of Higher Education, Government of India.
- [11]. Ministry of Education. (2022). All India survey on higher education 2020–21. Department of Higher Education, Government of India.
- [12]. Ministry of Education. (2023). All India survey on higher education 2021–22. Department of Higher Education, Government of India.
- [13]. Ministry of Education. (2024). All India survey on higher education 2022–23. Department of Higher Education, Government of India.
- [14]. National Council of Educational Research and Training. (2006). Position paper: National focus group on gender issues in education. NCERT.
- [15]. National Council of Educational Research and Training. (2017). Educational statistics at a glance. NCERT.
- [16]. National Sample Survey Office. (2019). Household social consumption on education in India: NSS 75th round. Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India.
- [17]. Sen, A. (1999). Development as freedom. Oxford University Press.
- [18]. Sharma, R. N., & Sharma, R. K. (2018). History of education in India. Atlantic Publishers.
- [19]. Singh, Y. (2004). Modernization of Indian tradition: A systematic study of social change. Rawat Publications.

- [20]. Tilak, J. B. G. (2007). Inclusive growth and education: On the social foundations of human development. Indian Journal of Human Development, 1(1), 5–24.
- [21]. UNESCO. (2017). Cracking the code: Girls' and women's education in science, technology, engineering and mathematics (STEM). UNESCO.
- [22]. UNESCO. (2020). Global education monitoring report 2020: Inclusion and education—All means all. UNESCO.
- [23]. UNESCO. (2021). Global education monitoring report 2021/2: Non-state actors in education. UNESCO.
- [24]. UNICEF. (2021). Gender equality: Global annual results report 2021. UNICEF.
- [25]. World Bank. (2018). World development report 2018: Learning to realize education's promise. World Bank. <https://doi.org/10.1596/978-1-4648-1096-1>

Cite this Article:

चक्रपाणि. (2026). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय समाज में स्त्रीकरण: लैंगिक आयामों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण. *Chaitanya Samvad Interdisciplinary Journal of Research*, 2(3), 18–26.

Doi: <https://doi.org/10.65250/chaitanyasamvad.v2i3.4>

Journal URL: <https://chaitanyasamvad.com/>



This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

Disclaimer/Publisher's Note: The opinions, interpretations, and information presented in this article are the sole responsibility of the author(s). The publisher and editorial team shall not be held responsible for any inaccuracies, copyright-related concerns, legal claims, or consequences resulting from the publication or use of this content.

तेजोऽन्या इवलयवद

Conscious Conversations | Meaningful Connections